Knowledgeable Research *ISSN 2583-6633* Vol.02, No.03, October, 2023

An International Peer-Reviewed Multidisciplinary Journal

Knowledgeable Research

ISSN 2583-6633

Vol.02, No.03, October,2023

http://knowledgeableresearch.com/

वेद- वेदान्त में पञ्चत्त्व-विमर्श

[१]डॉ. बैकुण्ठ नाथ शुक्ल एवं [२]डॉ. विक्रान्त उपाध्याय

[१]एसोसिएट प्रोफेसर एवं अध्यक्ष,संस्कृत विभाग एवं [२]एसोसिएट प्रोफेसर, बी.एड. विभाग

ने० मे० शि० दास (पी.जी.), कॉलेज,बदायूँ

****

सार: *यह शोध पत्र वेद और वेदांत में पंचतत्वों (पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, आकाश) के विमर्श को विस्तार से प्रस्तुत करता है। इसमें पंचतत्वों के गुणों, उनकी उत्पत्ति, और सृष्टि में उनकी भूमिका का वैदिक ग्रंथों के आधार पर विश्लेषण किया गया है। पृथ्वी के विभिन्न प्रतिक्रियात्मक स्वरूपों जैसे भूकम्प, ज्वालामुखी, गुरुत्वाकर्षण, और ज्वार-भाटा को वैदिक साहित्य के संदर्भ में समझाया गया है। साथ ही, जल के महत्व, उसके विभिन्न प्रकारों, और प्रदूषण मुक्त रखने की आवश्यकता पर भी प्रकाश डाला गया है। अध्ययन में यह दर्शाया गया है कि वैदिक ऋषियों ने प्राकृतिक घटनाओं और तत्वों का गहन अध्ययन कर उन्हें आध्यात्मिक और वैज्ञानिक दृष्टिकोण से समझा था।*

संकेत शब्द : *पंचतत्व, वेद, वेदांत, पृथ्वी, जल, गुरुत्वाकर्षण, ज्वालामुखी, भूकम्प, ज्वार-भाटा।*

****

पृथिवी, जल, तेज, वायु, आकाश ये पाँच पंचमहाभूत कहलाते हैं। प्रत्येक में कोई-न-कोई विशेष गुण पाया जाता है जिसका बाह्येन्द्रिय के द्वारा प्रत्यक्ष होता है। पंचमहाभूतों में सर्वप्रथम पृथिवी का विशेष गुण है, गन्ध। 'पृथिवी' शब्द भ्वादिगण की 'प्रथ् प्रख्याने' धातु से 'प्रवन्' तथा 'ड़ीप' प्रत्यय करने पर निष्पन्न होता है। आचार्य शाकटायन के अनुसार, 'प्रथनात् पृथिवी' हुआ। 'प्रथ् प्रथने' से निष्पन्न पृथिवी शब्द का अर्थ है- विस्तृत। विस्तृत शब्द से व्यापकता द्योतित होती है।

सम्पूर्ण सृष्टि की आधारभूता मातृशक्ति से संवलित पृथिवी को वैदिक वाङ्मय में वैविध्य के साथ प्रस्तुत किया गया है। उत्पत्ति से पूर्व पृथिवी की सत्ता को समुद्र के जल के भीतर स्वीकार किया गया है, जिसे बाहर लाने का श्रेय मनीषियों को है। पृथिवी का आवृत्त एवं अनश्वर शरीर परम व्योम में ही स्थित है। सत्य, महिमा, ऋत् उग्रता, दीक्षा, तपस्या आदि उसे धारण करते हैं-

"सत्यं बृहदृतमुग्रं दीक्षातपो ब्रह्मयज्ञः पृथिवीं धारयन्ति ।
सा नो भूतस्य भव्यस्यपत्त्युरुं लोकं पृथिवी नः कृणोतु ॥

(अथर्व० १२.१)

डॉ. बैकुण्ठ नाथ शुक्ल एवं डॉ. विक्रान्त उपाध्याय

Received Date: 07.10.2023

Acceptance Date: 26.10.2023

Publication Date: 30.10.2023

Knowledgeable Research *ISSN 2583-6633* Vol.02, No.03, October, 2023
An International Peer-Reviewed Multidisciplinary Journal

आध्यात्मिक, आधिदैविक तथा आधिभौतिक स्वरूप के साथ पृथिवी के आन्तरिक व बाह्य स्वरूपों को भी वेदों में उद्घाटित किया गया है। पुनः इस क्रम में पृथिवी के प्रतिक्रियात्मक स्वरूप के अन्तर्गत हम चार स्वरूपों को दृष्टिगत करते हैं-

१. भूकम्प, २. ज्वालामुखी,

३. गुरुत्वाकर्षण शक्ति, ४. ज्वारभाटा।

1. **भूकम्प :-** भूकम्प भू+क्विप्+कम्प धञ् प्रत्यय करने पर निष्पन्न होता है। हलायुध शब्दकोष में भूकम्प को इस रूप में निर्देशित किया गया है:-

'लोकानामनिष्टादिसूचके अद्भूतरूपे पृथिव्यादिस्वयं चलने।"

भूगर्भिक शक्तियों के परिणामस्वरूप धरातल के किसी भाग पर होने वाले आकस्मिक कम्पनों को भूकम्प कहा जाता है। वैदिक वाङ्मय में पृथिवी के कम्पन को अनेक स्थलों पर उपन्यस्त किया गया है। इनमें से कुछ पंचमहाभूतों से उत्पन्न होते हैं, यथा- वायुतत्त्व को वैदिक साहित्य में देवत्त्व प्रदान कर भूकम्प के प्रमुख कारण के रूप में वर्णित किया गया है। ऋग्वेद में कहा गया है कि वायुदेव सर्वाधिक शक्तिशाली है, जो शत्रुओं को हरा देते हैं। वायुदेव के इस कार्य से पृथिवी तथा स्वर्गलोक काँपते हैं। जब विश्वविख्यात मरुत्देव अपने रथ पर आरूढ़ होकर अत्यन्त वेग से भ्रमण करते हैं तो पृथिवी कम्पायमान हो जाती है। वेदों में अग्नि देव को भी अत्यधिक बलवान माना गया है। ऋग्वेद संहिता में वर्णन प्राप्त होता है कि अग्निदेव की गड़गड़ाहट और गम्भीर गर्जना से स्वर्गलोक तथा पृथिवीलोक भयभीत होकर काँपने लगे।

वैदिक वाङ्मय में सर्वप्रमुख देव इन्द्र को भी भूमि कम्पन में घटक तत्त्व माना गया है। ऋग्वेद में कहा गया है कि इन्द्रदेव के रथ के घोड़ों के वेग से बादल गरजने लगते हैं, पृथिवी काँपने लगती है तथा पर्वत गतिमान हो जाते हैं। जब इन्द्र ने वज से वृत्र पर प्रहार किया तो पृथिवी थरथराने लगी।

षड्विंश ब्राह्मण में भूकम्प को इस रूप में वर्णित किया है- "अथ यदास्य तटति, स्फुटति, कूजति, कम्पति, ज्वलति, रुदति, घूमायति, अकस्माद्रसलिलमुङ्गिरति, प्लवन्न मज्जति, न निगम्नमुत्प्लवति, अकाले च पुष्पफलमभिनिर्वर्तत्यश्वतरी गर्भो-जायते, यदा मज्जति हस्तिनी, भूकम्पो जायते, प्रसादे भिनत्ति, यत्र-तत्र राजा विनश्यति .... I"

(षडविंश ब्राह्मण सप्तमखण्डे)

प्राचीन काल में उत्पन्न इन भूकम्पों के निवारणार्थ ऋषिगण इन्द्र आदि देवगणों को हवि-दानादि से प्रसन्न कर पृथिवी के स्तम्भन की प्रार्थना किया करते थे। प्रसन्न देवगण पृथिवी के स्तम्भन में अद्भुत कार्यों को किया करते थे, यथा- ऋग्वेद में कहा गया है कि विष्णु देव ने अपनी रश्मियों द्वारा पृथिवी को चारों ओर से दृढ़ किया।

Received Date: 07.10.2023
Acceptance Date: 26.10.2023
Publication Date: 30.10.2023

Knowledgeable Research *ISSN 2583-6633* Vol.02, No.03, October, 2023
An International Peer-Reviewed Multidisciplinary Journal

2. ज्वालामुखी :- ज्वालामुखी शब्द ज्वाला तथा मुखी इन दो शब्दों का योग है। ज्वाला शब्द 'ज्वाल्' से टाप् प्रत्यय करने पर निष्पन्न होता है। ज्वालामुखी शब्द का अभिप्राय है- लावा निकलने का स्थान। आधुनिक विज्ञान के सदृश ही ऋग्वेद में भी पृथिवी का जनक सूर्य को माना गया है। इस आधार पर प्रारम्भिक अवस्था में पृथिवी सूर्य के समान ही आग का गोला थी। धीरे-धीरे इसकी सतह ठण्डी हुई, किन्तु पृथिवी की आन्तरिक सतह आज भी अत्यधिक गर्म है। शतपथ ब्राह्मण में भी पृथिवी को 'अग्निगर्भा' कहा है। यजुर्वेद में स्पष्ट रूप से कहा गया है कि **"माता पुत्रं साग्नि बिभर्तु गर्भ आ।"** (यजु० ७.११.५७) यही अग्निगर्भा पृथिवी भूगर्भिक शक्तियों से क्षुब्ध होकर अपने मुख से धुंआ, जल, गैसें, धूल, राख, लावा आदि उगलने लगती है। इस आकस्मिक क्रिया को 'ज्वालामुखी' कहा जाता है। आधुनिक वैज्ञानिक ज्वालामुखी के प्रमुख कारणों में भूगर्भिक असंतुलन, गैसों की उत्पत्ति, भूगर्भ में ताप वृद्धि, भूगर्भ में दाब की कमी आदि को मानते हैं।

ऋग्वेद में कहा गया है कि मानवों के कल्याण करने वाले ये अग्निदेव जब कुपित अवस्था में आते हैं तो इनकी ज्वालाएँ, वनस्पतियों को जला देती हैं, उपजाऊ भूमि को भी ऊसर बना देती हैं।

3. गुरुत्वाकर्षण:- 'गुरुत्वाकर्षण' शब्द 'गुरुत्व' तथा 'आकर्षण' इन दो शब्दों का योग है। गुरुत्व का अर्थ है-भार वाला तथा आकर्षण का अभिप्राय है किसी वस्तु को आकृष्ट करना, अपनी ओर खींचना। इस प्रकार गुरुत्वाकर्षण शक्ति का अभिप्राय है कि पृथिवी में आकर्षण शक्ति है जिससे वह ऊपर आकाश में स्थित वस्तुओं को अपनी ओर खींचती है। यह गुण सभी ग्रहों में होता है। इसी आकर्षण शक्ति के कारण सभी ग्रह ब्रह्माण्ड में अपनी स्थिति बनाए रखने में समर्थ होते हैं।

आधुनिक भौतिक वैज्ञानिक न्यूटन द्वारा प्रतिपादित गुरुत्वाकर्षण नियम के बीज वैदिक वाङ्मय में समुपलब्ध होते हैं। पृथिवी माता गुरुत्वाकर्षण शक्ति के कारण ही इस विशाल ब्रह्माण्ड में अपनी धुरी पर अवस्थित है। इसी शक्ति के कारण सूर्य, चन्द्र, पृथिवी आदि सभी एक दूसरे को अपनी ओर आकर्षित करते हैं।

सामवेद के एक मंत्र में कहा गया है कि सूर्य ने अपनी आकर्षण शक्ति से पृथिवी को और पृथिवी ने अपनी आकर्षण शक्ति से सूर्य को धारण कर रखा है। तैत्तिरीय आरण्यक में वर्तमान विज्ञान जगत् में सुप्रसिद्ध आकर्षण विज्ञान को प्रश्नोत्तर शैली में अत्यन्त स्पष्ट रूप से वर्णित किया गया है, यथा सुन्दर वर्ण वाली ये दोनों भूमियाँ-यह पृथिवी और यह सूर्य का मण्डल, जो अन्तरिक्ष रूपी समुद्र के दोनों तट हैं, इनके मध्य ऐसी कौन सी वस्तु है जिसने इन दोनों को पकड़कर अपने-अपने स्थान पर दृढ़ कर रखा है? यह प्रश्न उपस्थित होने पर प्रत्युत्तर प्राप्त होता है कि इन दोनों को विष्णु ने धारण कर रखा है। वत्स ऋषि के इसी विज्ञान को प्रतिपादित करते हुए ऋग्वेद की ऋचा कहती है-

इरावती धेनुमती हि भूतं सूयवसिनी मनुषेदरार ।।
व्यस्तभ्ना रोदसी विष्णवेते दाधर्थ पृथिवीमभितो मयूखैः ।।

(ऋग्वेद ४.६६.३)

डॉ. बैकुण्ठ नाथ शुक्ल एवं डॉ. विक्रान्त उपाध्याय
Received Date: 07.10.2023
Acceptance Date: 26.10.2023
Publication Date: 30.10.2023

Knowledgeable Research *ISSN 2583-6633* Vol.02, No.03, October, 2023
An International Peer-Reviewed Multidisciplinary Journal
उपर्युक्त दोनों स्थलों पर सम्बोधित विष्णु ईश्वर का बोधक होने की अपेक्षा सूर्य अर्थ के बोधन में ही अनुकूलता रखता है। फलतः सूर्य अपनी किरणों से पृथिवी को धारण किए हुए है। अथर्ववेद के बारहवें काण्ड में 'पृथिवी सूक्त का महत्वपूर्ण स्थान है इसमें पृथिवी की महत्ता का विशद विवेचन है। इस पृथिवी का कुछ भाग जलमय तथा कुछ भाग स्थलमय है। यह पृथिवी प्राणिमात्र को अपना अमृततुल्य जल प्रदान करती है जिससे श्वास लेने वाले तथा गति करने वाले प्राणी आनन्दपूर्वक रहते हैं-

यत् ते मध्यं पृथिवी यच्च नभ्यं यास्तु ऊर्जस्तन्वऽ:संवभूत ।
तासु नो धेह्यभि नः पवस्व माता भूमि पुत्रोऽहं पृथिव्याः।
पर्जन्यः पिता स उ नः पिपर्तु ।।

(अथर्व.१२.१२)

पुनः अथर्ववेद में वर्णन प्राप्त होता है कि सूर्य पृथिवी को पकड़े हुए हैं। सूर्य द्युलोक और विस्तीर्ण आकाश को पकड़े हुए है। 'अनड्वान्' सभी दिशाओं को पकड़े हुए है। अनड्वान् अन्यान्य छः पृथिवियों को पकड़े हुए है। यह अनड्वान् सर्वत्र आविष्ट है। यहाँ अनड्वान् नाम इन्द्र अर्थात् सूर्य का है। अतः ऋचा स्पष्ट रूप से निरूपण करती है कि पृथिवी आदि सभी का धारण सूर्य ही आकर्षण शक्ति से करता है।

व्याकरण महाभाष्य में कहा गया है कि ऊपर फेंका हुआ मिट्टी का ढेला, वाहुवेग को पूरा करके न ही टेढ़ा जाता है और न अधिक ऊपर चढ़ता है अपितु पृथिवी का विकार होने से पृथिवी पर ही आ जाता है।

4. **ज्वार-भाटा :-** पृथिवी के प्रतिक्रियात्मक स्वरूप में ज्वार-भाटा भी महत्वपूर्ण है। महासागरीय जल के ऊपर उठने को 'ज्वार' तथा नीचे गिरने को 'भाटा' कहा जाता है। ज्वार आने का कारण गुरुत्वाकर्षण शक्ति तथा भाटा आने का कारण पृथिवी का अपकेन्द्रीय बल है। गुरुत्वाकर्षण नियम के कारण पृथिवी, सूर्य तथा चन्द्रमा तीनों एक-दूसरे को अपनी ओर आकर्षित करते हैं। स्थल पर इसका प्रभाव कम दिखायी देता है, परन्तु जल तरल पदार्थ होने से सूर्य व चन्द्र की आकर्षण शक्ति से प्रभावित होकर ऊपर उठने लगता है। एक निश्चित सीमा तक ऊपर उठकर जल, पुनः पृथिवी के अपकेन्द्रीय बल के कारण नीचे आ जाता है।

पृथिवी, चन्द्रमा एवं सूर्य तीनों के एक सीधी रेखा में आने पर बृहत् ज्वार उत्पन्न होता है। यह स्थिति पूर्णिमा तथा अमावस्या को होती है। आधुनिक वैज्ञानिकों द्वारा प्रतिपादित इस ज्वार-भाटा क्रिया के संकेत वैदिक वाङ्मय में भी समुपलब्ध हैं। ऋग्वेद में कहा गया है कि जैसे समुद्र की लहरें स्वभावतः चन्द्रमा की ओर आकर्षित हो उछलती हैं और जैसे महात्मा जन स्वभाव से ही भजन की ओर आकर्षित होते हैं, वैसे ही सौम्य स्वभाव वाले विद्वान् ज्ञान, कर्म व उपासना की बोधक वेदवाणी की ओर आकर्षित होते हैं।"

शुक्ल यजुर्वेद में भाटा अर्थात् पृथिवी के अपकेन्द्रीय बल की परिपुष्टि इस रूप में की गयी है-

सिन्धोरिव प्राध्वने शूघनासो वातप्रमियः पतयन्ति यह्वाः।
घृतस्य धारा अरुषो न वाजी भिन्दन्नूर्मिभिःपिन्वमानः ।

काष्ठा पंचतत्त्वों से निर्मित इस भूमण्डल में प्रत्येक तत्त्व की महिमा हैं। किसी भी तत्त्व को कम नहीं कहा जा सकता। जीवन और जगत् के लिए पाँचों की अपरिहार्यता स्वतःसिद्ध हैं। पुनरपि, ऋग्वेद के ऋषि ने **"अप एव ससर्जादौ"** कहकर जल की सर्वश्रेष्ठता उद्घोषित कर

डॉ. बैकुण्ठ नाथ शुक्ल एवं डॉ. विक्रान्त उपाध्याय
Received Date: 07.10.2023
Acceptance Date: 26.10.2023
Publication Date: 30.10.2023

Knowledgeable Research *ISSN 2583-6633* Vol.02, No.03, October, 2023
An International Peer-Reviewed Multidisciplinary Journal
दी है। तैत्तिरीय आरण्यककार ने **"इमे लोका: अप्सु प्रतिष्ठिताः"** कहकर माना है कि समस्त लोक जल में ही अथवा जल के द्वारा ही प्रतिष्ठित हैं। 'जल' शब्द ज, ल इन दो अक्षरों से बनता है। 'ज' का अर्थ है 'जायन्ते' और 'ल' का अर्थ है 'लीयन्ते च यस्मिन तज्जलम्, ।' अर्थात् हमारे जन्म से लेकर मृत्युपर्यन्त की यात्रा जिसके अधीन है, वह है जल। ऋग्वेद के 'नासदीय सूक्त' में भी 'सृष्ट्यादौ' सर्वत्र जल ही जल होने की बात कही गई है।'

कविकुलगुरु कालिदास 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' के मंगलाचरण में **"या सृष्टिः स्रष्टुराद्या..."** कहकर जल को ही विधाता की प्रथम रचना मानते हैं। जल से परिपूर्ण सरिताओं और सरोवरों के तटों पर मानव निवास का इतिहास भी यह सिद्ध करता है कि जीवन के लिये जल कितना आवश्यक हैं। बहुआयामी प्रयोगों के कारण प्राचीन साहित्य में जल के सैकडों नाम उपलब्ध होते हैं। वैदिक कोश 'निघण्टु' ने इसके एक सौ एक नामों का परिगणन किया है। लौकिक साहित्य के प्रसिद्ध कोश 'अमरकोश' में २७नामों का उल्लेख है।' ऋषियों ने इसके महत्त्व को अनेक रूपों में दिखाया है। ऋग्वेद में जल को 'माता' कहा गया है।' एक अन्य स्थान पर पवित्रतम जलों से माता के समान अपने कल्याण की याचना की है-

यो वः शिवतमो रसस्तस्य भाजयतेह नः ।
उशतीरिव मातरः ।"

ब्राह्मण ग्रन्थों में जल को अमृतमय स्वीकार किया है। ऐतरेय ब्राह्मणकार कहता है कि इस लोक में जो जल है वह अमृत ही है- **"अमृतं वा एतस्मिन् लोके यद् आपः ।**

वैदिक ऋषि जल के रोग निवारक स्वरूप से अत्यन्त प्रभावित थे। चारों वेदों ने जल की रोग निवारक शक्ति का उच्च-स्वर से प्रतिपादन किया है। प्राकृतिक चिकित्सा-पद्धति में जल चिकित्सा द्वारा अनेक प्रकार के रोगों की सफल चिकित्सा की जाती है। यजुर्वेद में जलों के रोग निवारक मित्ररूप की कामना करते हुए कहा गया है-

सुमित्रिया न आप ओषधयः सन्तु ।'

अथर्ववेद तो जल को एक पूर्ण चिकित्सक मानता है। वैदिक संहिताओं में जल को दुरित निवारक एवं पाप-संशोधक भी कहा है- **इदमापः प्रवहता यत् किंच दुरितं मयि ।"**

जल के प्रकार : वैदिक वाङ्मय के विश्लेषणात्मक गहन अध्ययन से जल के विभिन्न प्रकारों का उल्लेख प्राप्त होता है। ऋग्वेद के एक मन्त्र में जल की पाँच विविधताओं का वर्णन है"- १. दिव्या आपः, २. सवन्ती आपः, ३. खनित्रिमा आपः, ४. स्वयंजाः आपः एवं ५. समुद्रार्थाः आपः।

किन्तु अथर्ववेद में नौ प्रकार के जलों का वर्णन है" यथा-

1. परिचरा आपः नगरों आदि के निकट प्राकृतिक झरनों से बहने वाला जल।

डॉ. बैकुण्ठ नाथ शुक्ल एवं डॉ. विक्रान्त उपाध्याय
Received Date: 07.10.2023
Acceptance Date: 26.10.2023
Publication Date: 30.10.2023

Knowledgeable Research *ISSN 2583-6633* Vol.02, No.03, October, 2023
An International Peer-Reviewed Multidisciplinary Journal

2. हैमवती आपः हिमयुक्त पर्वतों से बहने वाला जल
3. उत्स्याः आपः स्रोत का जल ।
4. संनिष्यंदा आपः शीघ्र बहने वाला जल।
5. वर्ष्या आपः वर्षा से उत्पन्न जल ।
6. धन्वन्या आपः मरुभूमि का जल ।
7. कुम्भेभिरावृता आपः घटों में रखा हुआ जल।
8. अनूप्या आपः अनूप देशज जल ।
9. अनभ्रयः आपः कुदाल आदि द्वारा निकाला गया जल।

गये हैं" -आयुर्वेद के ग्रन्थों में जल के मुख्य दो भेद बताये १. दिव्य जल, २. भौम जल। आकाश से गिरने वाला जल 'दिव्य जल' और पृथ्वी में होने वाले जल को 'भौम जल' कहते हैं। दिव्य जल चार प्रकार का माना गया है-१ धाराजनित, २. करकाजनित, ३. तुषारजनित एवं ४. हिम-जनित। भौम जल तीन प्रकार का होता है-१. जांगल जल. २. आनूप जल, ३. साधारण जल।

जल अथवा आप साहित्य की विविध धाराओं में अनेक अर्थों को द्योतित करता है। कहीं यह पेय जल का वाचक है; तो कहीं आध्यात्मिक जगत् में ईश्वर का वाचक भी है। आप शब्द तेज, आत्मगौरव, स्वाभिमान एवं तेजस्विता को भी द्योतित करता है। जल के महत्त्व का वर्णन करते हुए हिन्दी कवि रहीम ने कहा है-

रहिमन पानी राखिए, बिन पानी सब सून।
पानी बिना न ऊबरै, मोती मानुष चून ।।

जल प्राणी मात्र के लिये जीवन है, अमृत है, औषध है, और प्राण है; किन्तु आज पृथ्वी का ७१ प्रतिशत भाग जलमय होते हुए भी मनुष्य प्यासा है, बड़े-बड़े महानगरों में शुद्ध जल की आपूर्ति बड़ी समस्या बनती जा रही है। प्रदूषित जल के कारण न जाने कितने जीवन असमय में कालकवलित हो जाते हैं। परम पवित्र माने जाने वाली गंगा, यमुना आदि नदियों का जल तो वाराणसी, कानपुर, देहली आदि महानगरों में अब आचमन योग्य भी नहीं रह गया है।

जल तभी शान्तिदायक और सुखकारक है, जब तक प्रदूषण-रहित हैं। प्रदूषण रहित शुद्ध पवित्र जल से प्रार्थना की जाती है **"हमारे दोषों को दूर हटाओ' आपो ह तस्मादेनसः पवमानश्च मुञ्चतु।"** पवित्र जल मुझे दोषों से दूषित अपद्रव्यों से मुक्त करायें-**आपो मा तस्मात् सर्वस्मात् दुरितात् पान्त्वहंसः ।"** ऋग्वेद में कामना की है कि **'सर्वा नद्यो अशिमिदा भवन्तु ।"** अर्थात् सभी नदियाँ (समस्त जलस्रोत और जलाशय) प्रदूषण-रहित अतएव हानि-रहित हों।

डॉ. बैकुण्ठ नाथ शुक्ल एवं डॉ. विक्रान्त उपाध्याय
Received Date: 07.10.2023
Acceptance Date: 26.10.2023
Publication Date: 30.10.2023

Knowledgeable Research *ISSN 2583-6633* Vol.02, No.03, October, 2023
An International Peer-Reviewed Multidisciplinary Journal
वेदोत्तरकालीन साहित्य में स्पष्ट रूप से उल्लेख है कि इन नदियों में किसी प्रकार का प्रदूषक तत्त्व न जाने दें। जो मानव अपना या राष्ट्र का कल्याण चाहता है वह इन्हें प्रदूषित न करें। गंगा आदि पवित्र नदियों को मातृभाव से अत्यन्त शुद्ध रखें। पद्मपुराण में कहा है-

मूत्रं वाथ पुरीषं वा गङ्गातीरे करोति यः ।
न दृष्टा निष्कृतिस्तस्य तस्यकोटिशतैरपि ।।
उच्छिष्टं कफकं चैव गङ्गागर्भे च यस्त्यजेत् ।
स याति नरकं घोरं ब्रह्महत्यां च विन्दति ।।

तैत्तिरीय आरण्यक में कहा है- **नाप्सु मूत्रं पुरीषं कुर्यान्न निष्ठीवेत् ।"** अर्थात् जल में मल, मूत्र त्याग एवं थूकना नहीं चाहिए। आपस्तम्ब धर्मसूत्र में भी कहा गया है-अप्सु च (न मूत्रपुरीषे कुर्यात्-अनुवृत्त्या) **तथाष्ठीवन मैथुनयोः कर्माप्सु वर्जयेत् ।"** अर्थात् जलस्रोतों, जलमार्गों एवं जलाशयों में मूत्र-पुरीषोत्सर्ग, थूकना और मैथुनक्रिया नहीं करनी चाहिए। बृहत्संहिता' के प्रासादलक्षणाध्याय में वराहमिहिर ने लिखा है-

सरःसुनलिनीछत्रनिरस्तविरश्मिषु।
हंसांसाक्षिप्तकल्हारवीथीविमलवारिषु ।।
हंसकारण्डवक्रौञ्चचक्रवाकविराविषु ।
पर्यन्तनिचुलच्छायाविप्रान्तजलचारिषु ।।"

अर्थात् जिस सरोवर में कमल-छत्र से सूर्य किरण दूर किये गये हों, हंसों के कंधों से प्रेरित श्वेत कमलों से बने हुए मार्गों में निर्मल जल हो, जहाँ हंस, कारण्डव, क्रौञ्च और चक्रवाक शब्द कर रहे हो, निचुल वृक्षों की छाया में जीव विश्राम कर रहे हों ऐसे सरोवर में देवता निवास करते हैं।

वस्तुतः, यह कथन अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। जल के संरक्षण की वैज्ञानिक विधा है। दिव्य शक्तियुक्त होने का कथन करना यह संकेत करता है कि हम जल स्रोतों से दूषित और अपवित्र वस्तुओं को सदैव दूर रखें। 'बृहत्संहिता' में वापी के निकट लगाये जाने वाले निचुल, जामुन, बेंत, नीप (कदम्ब), अर्जुन, बड़, आम, पिलखन, बकुल, कुरबक, तार, अशोक, महुआ तथा मौलसरी इत्यादि वृक्षों का उल्लेख किया गया है। ये वृक्ष पर्यावरण के शोधन में सहायक हैं।

'बृहत्संहिता' में किस वृक्ष से कितनी दूरी पर एवं कितनी गहराई पर जल का स्रोत पृथ्वी के अन्दर स्थित है इसका विशद् वर्णन प्राप्त होता है। यह वर्णन संस्कृत मनीषियों की सूक्ष्मतम वैज्ञानिक दृष्टि की ओर संकेत करता है। जो जल मलिन, कटु लवणयुक्त, स्वादरहित या दुर्गन्धयुक्त हो, उसे संशोधित करके निर्मल, मधुर, सुन्दर गंध वाला और अनेक गुणों वाला करने के लिये भी आचार्य वराहमिहिर ने उपाय बताये हैं

अंजनमुस्तोशीरैः शराजकोशातकामलकचूर्णैः ।
कतकफलसमायुक्तैर्योगः कूपे प्रदातव्यः ।।

Received Date: 07.10.2023
Acceptance Date: 26.10.2023
Publication Date: 30.10.2023

Knowledgeable Research *ISSN 2583-6633* Vol.02, No.03, October, 2023
An International Peer-Reviewed Multidisciplinary Journal

कलुषं कटुकंलवणं विरसंसलिलं यदि वाशुभगन्धि भवेत् तदनेन भवत्यमलं सुरसं सुसुगन्धि गुणैरपरैश्चयुतम् ।।" अर्थात् अञ्जन, मोथा खस, राजकोशातक, आंवला एवं कतक का फूल इन सब का चूर्ण कूप में जलशोधन हेतु डालें। समय-समय पर समुचित वर्षा, मेघनिर्माण आदि के सम्बन्ध में संस्कृत साहित्य में विस्तृत वर्णन प्राप्त होते हैं। यज्ञ से जल-शुद्धि एवं 'वर्षेष्टि यज्ञ' से वर्षा आदि प्राचीन, अर्वाचीन ऋषियों, आचार्यों के अनुभूत सफल प्रयोग हैं। आज समय की पुकार है कि इन वैज्ञानिक तथ्यों को समझकर इनसे मानव जाति को सुखी करें।

सृष्टि पंचतत्त्वमयी है। 'पंचतत्त्व' ही 'पंचमहाभूत' हैं। 'पंचमहाभूत' का अर्थ है, 'पाँच सामान्य निमार्ण' (अंग्रेजी में 'फाइव जनरल बीइंग')। पहला है- 'आकाश'। आकाश का अर्थ है 'जिसमें फैलते हैं', आकाश स्वयं निष्क्रिय है। वायु, अग्नि और जल दूसरे, तीसरे और चौथे हैं। तीनों कियाशील हैं।

'वायु' माने 'बहती है'। वायु बहकर ही जीवों को प्राण देकर जीवित रखती है। 'अग्नि' का अर्थ 'आगे रहता है'। अग्नि के ताप से वायु सक्रिय होती है। अग्नि ही जल में विद्यमान रहकर उसमें उछाल और उबाल लाती है, फिर वायु जल को आगे बहाती है। इस तरह सृष्टि-संचालन में अग्नि सबसे आगे रहती है। 'जल' का अर्थ 'जिसमें जन्मते हैं और लय हो जाते हैं'। जल ही जीवन है। गर्भाधान के समय जलरूप वीर्य में शुक्राणु तैरते हैं। शुक्राणु जल से ही जीवन पाता है। प्राणी जल से ही जीवित रहता है। शरीर में जल की कमी निर्जलीकरण (डिहाइड्रेशन) है। यह किसी भी तरह जल की कमी हो जाए, तो जीव मर जाता है। उल्टी- दस्त, रक्तस्राव, तीव्र ज्वर, प्यासे रहने, आदि से ऐसा होता है।

'पृथिवी' पाँचवाँ और अन्तिम महाभूत है। आकाश की तरह यह भी निष्क्रिय है। 'पृथिवी' याने 'जो फैली हुई है। वह आकाश में दौड़ती हुई सूर्य का चक्कर लगाती है। इसकी चार गतियाँ हैं- १. अपनी धुरी पर घूमती है, जिससे दिन और रात होते हैं, २. सूर्य का चक्कर ३६५ दिनों में लगाती है। दो गतियाँ और हैं, जिन्हें कम लोग जानते हैं। ३. यह उत्तर से दक्षिण को लुढ़कती है। यह गति बहुत धीमी है, और हजारों वर्ष में परिणाम रूप में जलवायु परिवर्तन होते हैं और उत्तरी- दक्षिणी ध्रुव उत्तर की ओर खिसकते हैं। लाखों वर्ष पूर्व भारत के उत्तर में 'पर्वत मेरु' (अब पामीर का पठार शेष) था। 'मेरु' याने 'धुरी'। तब भारत में भी छः-छः महीनों के दिन और रात होते थे, जिसका वर्णन वेदों में है। ४. पृथिवी सूर्य की परिक्रमा करते कभी उछलती भी है।

प्राणियों के शरीर मिट्टी के पुतले हैं, जो शेष चार तत्त्वों को मिलाकर बने हैं। कुरआनशरीफ में कहा है कि ईश्वर ने मनुष्य को मुट्ठी भर मिट्टी से बनाया। हिन्दुओं के दाह-संस्कार के बाद मुट्ठी भर ही अवशेष बचते हैं। प्राणी के तीन शरीर भारतीय ग्रन्थों में वर्णित हैं। जीवित प्राणी का 'स्थूल शरीर' पंचतत्त्वों से बना है। मरने पर अँगूठे बराबर प्रकाश रूप में 'सूक्ष्म शरीर तीन तत्त्वों-अग्नि, वायु और आकाश का होता है। पृथिवी और जल यहीं रह जाते हैं। ये तीन तत्त्वों और चार अन्तःकरण रूप मन, बुद्धि, चित्त, अहंकार सात तत्त्व मिलकर सूक्ष्म शरीर ही जीव के पुनर्जन्म में हेतु रूप 'जीव' होता है। मन टेलीविजन की स्क्रीन की तरह सूक्ष्म दर्पण है। निर्मल होने पर यह वैश्विक मन से दृश्य और वाणी को प्रतिध्वनित और प्रतिबिम्बित करता है। अशुद्ध होने पर संसार को देखता, सुनता और उसके भावों में लिप्त रहता है। बुद्धि स्मृति और विस्मृति वाली है। चित कम्प्यूटर की सी.डी. की तरह है, जिसमें अनुभव, संस्कार आदि पाप-पुण्य अंकित होते हैं, जो सुख-दुःख के भोग का कारण बनते हैं। अहंकार जीव की अपने होने की अनुभूति है।

डॉ. बैकुण्ठ नाथ शुक्ल एवं डॉ. विक्रान्त उपाध्याय
Received Date: 07.10.2023
Acceptance Date: 26.10.2023
Publication Date: 30.10.2023

Knowledgeable Research *ISSN 2583-6633* Vol.02, No.03, October, 2023
An International Peer-Reviewed Multidisciplinary Journal

तीसरा शरीर 'कारण शरीर' है, जो 'सूक्ष्म शरीर' का मूल है। सिद्धावस्था में सूक्ष्म शरीर के तीन महाभूतों की समाप्ति पर अन्तःकरण रूप मन, बुद्धि, चित्त, और अहंकार से युक्त जीव रूप में रहता है। इस लोक में साधना कच्ची रहने पर योगी सौरमंडल से परे अन्तरिक्ष में स्थित 'सिद्धलोक' में रहकर साधना पूर्ण करता है और परिपक्व होकर 'कारण शरीर' को छोड़कर मुक्त होता है।

वेदों में अन्तरिक्ष में व्याप्त अग्नि, सोम और मातारिश्वा की चर्चा है। अग्नि के तीन रूप हैं- सूर्य, विद्युत और स्थूल अग्नि। सोम अन्तरिक्ष में व्याप्त जल का सूक्ष्म रूप है इसीलिए अन्तरिक्ष को अर्णव और समुद्र कहा गया है। 'मातरिश्वा' अन्तरिक्ष की वायु है। इस तरह अग्नि, जल और वायु सूक्ष्म रूप में सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड में व्याप्त होकर तारों, आकाशगंगा आदि को सही राह पर चलाते और सुदृढ़ रखते हैं।

अग्नि अन्तरिक्ष में विद्युत रूप में व्याप्त है, वही विशाल चुम्बक की तरह आकाशगंगा के तारामण्डलों, ग्रहों आदि को ध्रुव तारे से जोड़ती है। ध्रुवतारा आकाशगंगा का चुम्बकीय केन्द्र है। आकाशगंगा का स्वरूप हजार फनों वाले महानाग की तरह है। विराट् चुम्बकीय सिरों से प्रत्येक तारा, ग्रह कठपुतली के धागों की तरह जुड़े हैं। इसे ही पुराण 'शेष' कहते हैं, क्योंकि यही चुम्बकीय शक्ति महाप्रलय के बाद शेष रह जाती है। इसे 'संकर्षण' भी कहते हैं। संकर्षण याने 'एक दूसरे को आकर्षित करने वाली शक्ति । यही न्यूटन द्वारा विज्ञान की 'गुरुत्वाकर्षण शक्ति है। विज्ञान को इस शक्ति का पता अपनी पृथ्वी के संदर्भ में हुआ है। ऋषियों को सम्पूर्ण सृष्टि में व्याप्त इस शक्ति का ज्ञान था।

यह चुम्बकीय शक्ति 'अनन्त' भी कही गयी है, क्योंकि महाप्रलय के बाद भी समाप्त नहीं होती है। पुराण कहते हैं कि महाप्रलय होने पर विष्णु क्षीरसागर में शेषशय्या पर सोते हैं। 'विष्णु' याने जो 'सृष्टि में प्रविष्ट हैं'। 'वासुदेव' याने जो संसार के अन्दर रहकर दमन' (कास्मिकेता रहता है। राम, याने जो कण-कण में रम रहा है। 'विश्वम्भर' याने 'सबका भरण-पोषण करता है। विज्ञान उसे 'ब्रह्माण्डीय माइण्ड) कहता है। वेद और पुराण उसे अनेक नामों से पुकारते हैं।

यही 'संकर्षण' रज्जु (डोर) प्रत्येक जीव के कपाल-पिण्ड में मस्तिष्क में विद्युत-शक्ति देकर उसे जीवित बनाये रखती है। प्राण 'आक्सीजन' है, जो रक्त को चलाती है। श्वास-प्रश्वास बंद होने पर हृदय गति थम जाती है, परन्तु जीव मरता नहीं। डाक्टर मस्तिष्क के मरने ('ब्रेन डेथ) को ही वास्तविक मृत्यु मानते हैं। इस तरह अग्नि ही विद्युत रूप में जीव को जीवन देती है, जल उसे जिलाये रखता है। वायु शरीर में संचरण कर उसे आवश्यक पोषण-सामग्री पहुँचाती है, रसों का क्षरण करती है, अनावश्यक द्रव्यों को बाहर निकालती है। सृष्टि में पंचमहाभूत सम्पूर्ण स्थावर जंगम के जीवन को देने वाले, संचालन में सहायक और सर्वथा उपकारक हैं। इसीलिए हम हर शुभ अनुष्ठान में उनको देवता मानकर उनकी स्थापना कर पूजा करते हैं। वे 'शिव' की अष्टमूर्ति में महत्त्वपूर्ण और शिव (कल्याण) के हेतु हैं।

सन्दर्भ

१. ऋग्वेद-१०/१/३.१०/२६/३

२. तैत्तिरीय आरण्यक-१/२२/८

३. ऋग्वेद (नासदीय सूक्त)

डॉ. बैकुण्ठ नाथ शुक्ल एवं डॉ. विक्रान्त उपाध्याय

Received Date: 07.10.2023
Acceptance Date: 26.10.2023
Publication Date: 30.10.2023

Knowledgeable Research *ISSN 2583-6633* Vol.02, No.03, October, 2023
An International Peer-Reviewed Multidisciplinary Journal
४. निघण्टु-१/१२

५. अमरकोश- १/१०/३.....५

६. ऋग्वेद-१/१३/१६

७. ऋग्वेद-१०/६/२

८. ऐतरेय ब्राह्मण - ८/२०

६. चजुर्वेद- २०/१६

१०. अथर्ववेद- ६/११/३

११. ऋग्वेद- १/२३/२२

१२. ऋग्वेद-७/४६/२

१३. अथर्ववेद- १२/१/६

१४. स्वास्थ्य संहिता पृष्ठ १६१-१६३

१५. यजुर्वेद-६/१७

१६. अथर्ववेद- १०/५/२२

१७. ऋग्वेद-७/५०/४

१८. पद्मपुराण- ७/८/८/१०

१६. तैत्तिरीय आरण्यक - १/२६/७

२०. आपस्तम्ब धर्मसूत्र- १/३०/२१, २२

२१. बृहत्संहिता प्रासादाध्याय

२२. बृहत्संहिता - दकार्गलाध्याय-१२१, १२२

डॉ. बैकुण्ठ नाथ शुक्ल एवं डॉ. विक्रान्त उपाध्याय
Received Date: 07.10.2023
Acceptance Date: 26.10.2023
Publication Date: 30.10.2023